Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

لَا تَمُدَّنَّ عَیۡنَیۡکَ اِلٰی مَا مَتَّعۡنَا بِہٖۤ اَزۡوَاجًا مِّنۡہُمۡ وَلَا تَحۡزَنۡ عَلَیۡہِمۡ وَاخۡفِضۡ جَنَاحَکَ لِلۡمُؤۡمِنِیۡنَ ○

सूरः अल् हिज्र, आयत : 89

अनुवाद : अपनी आँखें इस अस्थायी सामान की ओर न पसार जो हमने उनमें से कुछ समूहों को प्रदान की है, और उन पर दुःख न कर, और मोमीनो के लिए अपने (स्नेह के) पंख झुका दे।

वर्ष- 9
अंक - 42

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

13 रबी उल् सानी , 1446 हिज्री कमरी, 17 ईखा 1403 हिज्री शम्सी, 17 अक्टूबर 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

खाने में बरकत का चमत्कार

{2618} हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि हम नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ एक सौ तीस आदमी थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा: "क्या तुम में से किसी के पास खाना है?" देखा तो एक शख़्स के पास एक साअ या उसके करीब-करीब थोड़ा आटा था। वह आटा गूंथा गया, इसके बाद एक मुशरिक शख़्स उलझे हुए बालों वाला और लंबा कद वाला, बकरियां हांकता हुआ आया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा: "बेचनी हैं या यूं ही देनी हैं?" 'अतिया' का लफ़्ज़ फ़रमाया या 'हिबा' का। उसने कहा: "यूं ही नहीं, बल्कि बेचनी हैं।" तो आपने उससे एक बकरी खरीदी। वह बकरी ज़बह करके पकाने के लिए तैयार की गई। आपने फ़रमाया: "कलेजी भून दी जाए।" और बखुदा, एक सौ तीस आदमियों में से एक भी ऐसा नहीं था जिसे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस बकरी की कलेजी का एक टुकड़ा काट कर न दिया हो। अगर कोई मौजूद था, तो उसे दे दिया और अगर मौजूद नहीं था, तो आपने उसके लिए महफ़ूज़ कर लिया। और उस बकरी के गोश्त से दो बड़े-बड़े प्याले तैयार किए गए। सबने खाया और हम सब पेट भर गए, और दोनों प्यालों में गोश्त बचा रहा। हमने उसे ऊंट पर रख लिया, या कुछ ऐसे ही अल्फ़ाज़ थे जो रावी ने कहे।

(सहीअल्-बुखारी, भाग 4, किताबुल्-हिबा)

ईमान एक शक्ति है जो सच्ची बहादुरी और हिम्मत इंसान को प्रदान करता है। इसका उदाहरण हमें सहाबा कराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन की जिंदगी में देखने को मिलता है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

ख़ुदा की राह में कठिनाइयों को सहना, मुसीबतों और समस्याओं का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार हो जाना, यह सब ईमानी ताकत से ही संभव होता है। ईमान वह शक्ति है जो सच्ची शुजात (बहादुरी) और हिम्मत इंसान को देता है, और इसका नमूना सहाबा की जिंदगी में नज़र आता है। जब वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ होते थे, तो कौन सी चीज़ थी जो उन्हें यह उम्मीद दिलाती थी कि इस तरह एक बेसहारा और कमज़ोर इंसान के साथ हो जाने से हमें कोई सवाब मिलेगा? ज़ाहिरी नज़र से देखने पर तो बस यही लगता था कि इस एक इंसान के साथ होने से उन्होंने सारी कौमों को अपना दुश्मन बना लिया है, और इसका नतीजा यह होगा कि मुसीबतों और मुश्किलों का पहाड़ टूट पड़ेगा और वे बर्बाद हो जाएंगे।

लेकिन कोई और आँख भी थी, जिसने इन मुसीबतों और परेशानियों को कुछ भी नहीं समझा। उस राह में मर जाना उसकी नज़र में एक आराम और खुशी का कारण था। उसने वो देखा था जो इन दुनिया की आँखों से छिपा हुआ और बहुत दूर था। वह ईमानी नज़र थी और ईमानी ताकत थी, जिसने इन तमाम तकलीफों और दर्द को बिल्कुल मामूली बना दिया था। आखिर में ईमान ही कामयाब हुआ और उसने वह करिश्मा दिखाया कि जिस पर लोग हँसते थे और जिसे कमज़ोर और बेसहारा समझते थे, उस ईमान ने उन्हें कहाँ पहुँचा दिया। वह सवाब और इनाम, जो पहले छिपा हुआ था, फिर ऐसा ज़ाहिर हुआ कि दुनिया ने उसे देखा और महसूस किया कि हाँ, यह उसी का फल है।

ईमान की बदौलत सहाबा की वह जमाअत न तो थकी और न ही मायूस हुई, बल्कि ईमानी ताकत

शेष पृष्ठ 10 पर

जो लोग खुदा तआला के दीन की ताईद (समर्थन) के लिए खड़े हो जाते हैं, अल्लाह तआला उनकी मदद करता है।

जिहाद के लिए आवश्यक शर्तें अनिवार्य होना तथा धार्मिक एवं राजनीतिक युद्धों में अंतर

सैयदना हज़रत मुसलिह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः अल् हज, आयत : 39 और उससे आगे की आयतों की तफ़्सीर (विवेचना) में फरमाते हैं :

इस्लामी तालीम के अनुसार जंग (युद्ध) की इजाज़त केवल उसी अवस्था में होती है जब कोई क़ौम लंबे समय तक दूसरी क़ौम के ज़ुल्मों का निशाना बनी रहे और ज़ालिम क़ौम उसे "रब्बुना अल्लाह" कहने से रोके। अर्थात जब कोई क़ौम दूसरों के दीन (धर्म) में दखल दे, ज़बरदस्ती इस्लाम से फिराए या उसमें दाखिल होने से रोके और इस्लाम कबूल करने वालों को केवल इस्लाम कबूल करने के जुर्म में क़त्ल करे। ऐसी क़ौम के सिवा किसी दूसरी क़ौम से जिहाद नहीं हो सकता, लेकिन अगर जंग होगी, तो वह केवल राजनीतिक और राष्ट्रीय जंग होगी, जो दो मुस्लिम क़ौमों के बीच भी हो सकती है, परंतु इसे जिहाद नहीं कहा जाएगा। और ऐसी जंग में शामिल होना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ नहीं होगा, बल्कि केवल उन्हीं मुसलमानों पर होगा जो उस लड़ने वाली हुकूमत में रहते हों। क्योंकि यह जंग "हुब्बुल्-वतन" (देशप्रेम) की जंग कहलाएगी, इसे दीन की जंग नहीं कहा जाएगा। और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है, "ब्बुल्-वतन मिनल्-ईमान" अर्थात वतन की मुहब्बत भी ईमान का हिस्सा है।

इसके बाद बताया कि ऐसी मजलूम क़ौम का फ़र्ज़ होता है कि जब उसे ताक़त मिले, तो वह तमाम मज़ाहिब (धर्मों) की हिफ़ाज़त करे और उनकी मुक़द्दस जगहों का अदब और एहतिराम करे। और इस ग़लबे (विजय) को अपनी ताक़त का ज़रिया न बनाए, बल्कि ग़रीबों की खबरगीरी, मुल्क की हालत की इस्लाह (सुधार) और फ़ित्ना-फ़साद के मिटाने में अपनी ताक़तें खर्च करे। क्योंकि इस्लाम दुनिया में एक गवाह और मुहाफ़िज़ (रक्षक) के तौर पर आया है, ना कि एक ज़ालिम और जबर करने वाले के रूप में।

वे लोग जो इस्लामी जिहाद पर ऐतराज़ (आलोचना) करते हैं, उन्हें सोचना चाहिए कि क्या इस किस्म की लड़ाई मुसलमानों के इख़्तियार में है कि जब चाहें शुरू कर दें और काफ़िरों को क़ैदी बनाना शुरू कर दें? इस

शेष पृष्ठ 10 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जंग-ए-अहज़ाब से पहले अबू सुफ़यान के एक ख़त के जवाब में लिखा :

"सुनो ! आख़िरकार ख़ुदा हमें कामयाब करेगा और हे बनू ग़ालिब के बेवक़ूफ़ों ! याद रखो कि एक दिन आएगा जब तुम्हारे लात, उज्ज़ा, इसाफ़, नायला और हुबल के टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएंगे और उस दिन मैं तुम्हें यह सब याद दिलाऊंगा।"

ख़ंदक खोदने का फ़ैसला सिर्फ़ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ियल्लाहु अन्हु) की सलाह की वजह से नहीं था, बल्कि अल्लाह तआला ने इल्हाम के माध्यम से नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को यह तरीक़ा बताया था।

ग़ज़वा-ए-अहज़ाब के असबाब और इसके शुरुआती हालात-ओ-वाक़यात का वर्णन।
पाकिस्तान के अहमदियों और आम तौर पर दुनिया की भलाई के लिए दुआओं की अपील, और पाकिस्तान के अहमदियों को दुआओं और सदक़ा-ख़ैरात की तरफ़ ध्यान देने की तालीम दी गई।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 06 सितंबर 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज मैं ग़ज़वा-ए-ख़ंदक या ग़ज़वा-ए-अहज़ाब का वर्णन करूंगा, जो 5 हिजरी के मुताबिक़ फ़रवरी और मार्च 627 ईसवी में हुआ था।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, एम.ए., पृष्ठ 573)

क़ुरआन करीम में जंग-ए-अहज़ाब का वर्णन इस तरह आया है...

:أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ
عَلَيْكُمْ إِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَكَانَ اللّٰهُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿۱۰﴾ إِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ
زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ﴿۱۱﴾ هُنَالِكَ
ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿۱۲﴾ وَإِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ إِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۳﴾ وَإِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ
مِّنْهُمْ يٰٓأَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ
يَقُوْلُوْنَ إِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ إِنْ يُّرِيْدُوْنَ إِلَّا فِرَارًا ﴿۱۴﴾ وَلَوْ دُخِلَتْ
عَلَيْهِمْ مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ إِلَّا يَسِيْرًا
﴿۱۵﴾ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْأَدْبَارَ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْئُوْلًا
﴿۱۶﴾ قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ
إِلَّا قَلِيْلًا ﴿۱۷﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا أَوْ أَرَادَ
بِكُمْ رَحْمَةً وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿۱۸﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ
الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا وَلَا يَأْتُوْنَ الْبَأْسَ إِلَّا
قَلِيْلًا ﴿۱۹﴾ أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ فَإِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ إِلَيْكَ تَدُوْرُ
أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِأَلْسِنَةٍ
حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ أُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَأَحْبَطَ اللّٰهُ أَعْمَالَهُمْ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى
اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۲۰﴾ يَحْسَبُوْنَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا وَإِنْ يَّأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ
أَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُوْنَ عَنْ أَنْبَآئِكُمْ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا إِلَّا
قَلِيْلًا ﴿۲۱﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَ
الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿۲۲﴾ وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْأَحْزَابَ قَالُوْا هٰذَا
مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّآ إِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا
﴿۲۳﴾ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿۲۴﴾ لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ
وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ إِنْ شَآءَ أَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿۲۵﴾ وَ
رَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ وَ
كَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿۲۶﴾

(الاحزاب:10تا26)

क़ुरआन करीम की आयात का हिंदी अनुवाद यह है :

"अपने ऊपर अल्लाह की उस नेमत को याद करो, जब तुम्हारे पास (दुश्मन) सेना आई थी, तो हमने उनके खिलाफ़ एक हवा भेजी और ऐसी सेनाएँ भेजीं जिन्हें तुम देख नहीं सकते थे। और यक़ीनन अल्लाह उस पर गहरी नज़र रखने वाला है जो तुम करते हो। जब वे तुम्हारे पास तुम्हारे ऊपर की तरफ़ से भी और तुम्हारे नीचे की तरफ़ से भी आए और जब आँखें (डर से) पत्थरा गईं और दिल (उछलते हुए) हंसली तक पहुँच गए, और तुम लोग अल्लाह के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे। वहाँ मोमिन (सच्चे ईमान वाले) आज़माइश में डाले गए और उन्हें सख़्त (परीक्षा के) झटके दिए गए। और जब मुनाफ़िक़ों (दिखावे के मुसलमानों) और उन लोगों ने जिनके दिलों में रोग था, कहा, 'हमसे अल्लाह और उसके रसूल ने धोखे के सिवा कोई वादा नहीं किया।' और जब उनमें से एक समूह ने कहा, 'हे अहल-ए-यस्रिब (मदीना के निवासियों), तुम्हारे ठहरने का अब कोई अवसर नहीं है, इसलिए वापस चले जाओ।' और उनमें से एक फ़रीक़ ने नबी से यह कहते हुए इजाज़त माँगनी शुरू की, 'निश्चित रूप से हमारे घर असुरक्षित हैं,' जबकि वे असुरक्षित नहीं थे। वे केवल भागने का इरादा किए हुए थे।

और अगर उन पर इस (बस्ती) के हर तरफ़ से चढ़ाई कर दी जाती, फिर उनसे फ़साद (दंगे) का मुतालबा किया जाता, तो वे ज़रूर इसके मुर्तकिब (दोषी) हो जाते और इस पर ज़रा भी देर न करते। हालाँकि इससे पहले उन्होंने यक़ीनन अल्लाह से यह अज़्म किया था कि वे पीठ नहीं दिखाएँगे, और अल्लाह से किया गया वादा ज़रूर पूछा जाएगा। तो कह दे कि तुम्हारा भागना हरगिज़ तुम्हें फ़ायदा नहीं देगा, अगर तुम मौत या क़त्ल से भागोगे, और इस सूरत में तुम्हें कुछ फ़ायदा नहीं दिया जाएगा परंतु थोड़ा सा।

तुम पूछो कि कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है, अगर वह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुँचाने का इरादा करे या तुम्हारे हक़ में रहमत का फ़ैसला करे? और वे अपने लिए अल्लाह के सिवा न कोई सरपरस्त पाएँगे और न कोई मददगार। अल्लाह तुममें से उन लोगों को ख़ूब जानता है जो (जिहाद से) रोकने वाले हैं और अपने भाइयों से कहते हैं कि 'हमारी तरफ़ आओ।' और वे लड़ाई के लिए नहीं आते परंतु बहुत कम। तुम्हारे खिलाफ़ बहुत ख़सासत (बचने की प्रवृत्ति) से काम लेते हैं। तो जब कोई ख़ौफ़ (डर का मौक़ा) आता है, तो तुम उन्हें इस तरह देखोगे कि वे तुम्हारी तरफ़ इस तरह देख रहे हैं कि उनकी आँखें (दहशत से) घूम रही होती हैं, उस शख़्स की तरह जिस पर मौत की बेहोशी तारी हो गई हो। फिर जब ख़ौफ़ जाता रहता है, तो वे अपनी तेज़ ज़बानों से तुम्हें तकलीफ़ पहुँचाते हैं, भलाई के मामले में बख़ील (कंजूस) होते हुए। ये वे लोग हैं जो (हक़ीक़तन)

ईमान नहीं लाए। तो अल्लाह ने उनके आमाल (कर्म) ज़ाया कर दिए, और यह बात अल्लाह के लिए बहुत आसान है।

वे गुमान करते हैं कि सेनाएँ अभी तक नहीं गईं। और अगर सेनाएँ (वापस) आ जाएँ, तो वे (हसरत से) चाहेंगे कि काश वे वीरानों में बद्दुओं के बीच रहते होते (और) तुम्हारे हालात मालूम कर रहे होते, और अगर वे तुम्हारे साथ होते भी, तो वे क़िताल न करते मगर बहुत कम।

यक़ीनन तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक बेहतरीन उदाहरण है हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह और यौम-ए-आख़िरत की उम्मीद रखता है और कसरत से अल्लाह को याद करता है।

और जब मोमिनों ने सेनाओं को देखा, तो उन्होंने कहा, 'यही तो है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था,' और अल्लाह और उसके रसूल ने सच्च कहा था, और इसने उन्हें और बढ़ाया मगर ईमान और फ़रमाबरदारी में।

मोमिनों में ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने जिस बात पर अल्लाह से अज़्म किया था, उसे सच्चा कर दिखाया। तो उनमें से वह भी है जिसने अपनी मन्नत को पूरा कर दिया और उनमें से वह भी है जो अभी इंतेज़ार कर रहा है, और उन्होंने हरगिज़ (अपने तौर-तरीके में) कोई तब्दीली नहीं की। (यह इसलिए है) ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई की जज़ा दे और मुनाफ़िकों को, अगर चाहे तो अज़ाब दे या तौबा क़बूल करते हुए उन पर झुके। यक़ीनन अल्लाह बहुत बख़्शने वाला (और) बार-बार रहमत करने वाला है।

और अल्लाह ने उन लोगों को जिन्होंने कुफ्र किया, उनके ग़ैज़ (क्रोध) समेत इस तरह लौटा दिया कि वे कोई भलाई हासिल न कर सके। और अल्लाह मोमिनों के हक़ में क़िताल में काफ़ी हो गया। और अल्लाह बहुत क़वी (मज़बूत) और क़ामिल ग़ल्बा वाला है।"

(अनुवाद: हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ रहमहुल्लाह)

यह क़ुरआन शरीफ की आयतों का हिंदी अनुवाद है।

इस जंग का नाम और कारण:

जंग का यह नाम किस तरह रखा गया? इस जंग को जंग-ए-ख़ंदक भी कहा जाता है क्योंकि अरब के रिवाज और दस्तूर के खिलाफ़ पहली बार मुसलमानों ने ख़ंदक खोद कर रक्षात्मक युद्ध लड़ा था। इसे जंग-ए-अहज़ाब भी कहा जाता है, जैसा कि क़ुरआन शरीफ में इसे यही नाम दिया गया है। "अहज़ाब" हिज़्ब की जमा (बहुवचन) है, जिसका मतलब जमाअत और गिरोह होता है। चूंकि इस युद्ध में अरब के विभिन्न समूह और क़बीले एकजुट होकर मुसलमानों पर हमला करने आए थे, इसलिए इसे जंग-ए-अहज़ाब कहा गया।

इसकी वजह:

यह बताया जाता है कि रबीउल-अव्वल 4 हिजरी में यहूदी क़बीला बनू नज़ीर अपनी अहदशिकनी (संधि तोड़ने), बगावत और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को क़त्ल करने जैसी साज़िशों के कारण मदीना से निकाल दिया गया था। इस अहदशिकन और बाग़ी क़बीले की सज़ा तो इससे भी ज़्यादा सख़्त हो सकती थी, लेकिन उनकी दरख्वास्त पर पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने रहम करते हुए उन्हें माफ़ किया और उन्हें जला वतन कर दिया, जिस पर यह क़बीला अपना सारा सामान लेकर मदीना से कुछ दूर ख़ैबर जाकर बस गया।

लेकिन अभी चार महीने ही गुज़रे थे कि इन एहसानफ़रामोश और साज़िशी यहूदियों ने इस्लाम और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ़ एक खतरनाक साज़िश रची, जिसका उद्देश्य मुसलमानों का पूरी तरह से खात्मा करना था। इस साज़िश के मुताबिक, बनू नज़ीर का सरदार हुइय्य बिन अख़्तब, जो अपने घमंड, तकब्बुर और इस्लाम के खिलाफ़ दुश्मनी की वजह से यहूदियों का अबू जहल कहलाने लायक था, अपने साथियों के साथ मक्का गया। वहां उसने अबू सुफ़ियान और अन्य क़ुरैशी नेताओं से मुलाकात की और कहा, "हम तुम्हारे साथ हैं। हम मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और उनके साथियों का नामोनिशान मिटाने का इरादा रखते हैं। हम यहाँ इसी उद्देश्य के लिए आए हैं, ताकि हम सब मिलकर मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ़ एक मुआहदा (संधि) करें।"

मक्का के मुश्रिकीन (मूर्ति पूजक) को और क्या चाहिए था? वे पहले से ही ऐसे खूनी मंसूबे रखते थे और बद्र और उहद की जंगें लड़ चुके थे, लेकिन अपने असल उद्देश्य में नाकाम रहे थे। बद्र की शिकस्त और उहद की शर्मिंदगी के घाव फिर से ताज़ा हो गए। अबू सुफ़ियान ने बनू नज़ीर के इन नेताओं का स्वागत करते हुए कहा, "तुम अपने घर आए हो, और हमें सबसे ज़्यादा वही पसंद है जो मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की दुश्मनी में हमारी मदद करे।" बातचीत के बाद क़ुरैश के पचास लोगों और इन यहूदियों ने काबा के पर्दे को पकड़कर कसम खाई कि वे एक-दूसरे का साथ देंगे और मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ़ एकजुट होंगे।

इसके बाद अबू सुफ़ियान के साथ मदीना पर बड़े पैमाने पर हमला करने की योजना और तारीख तय करने के बाद, बनू नज़ीर का यह वफ़्द अरब के अन्य क़बीलों की तरफ़ गया, जो मुसलमानों के खून के प्यासे थे और कई बार नाकाम हमले भी कर चुके थे। सबसे पहले वे बनू ग़त्फ़ान के पास गए। यह अरब का एक बहादुर क़बीला माना जाता था और इस्लाम के खिलाफ़ नफ़रत में मशहूर था। यहूदियों ने उन्हें रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से जंग करने की दावत दी और एक साल की ख़ैबर की खजूरों का लालच भी दिया। यह भी बताया कि क़ुरैश मक्का भी हमारे साथ हैं। इस पर बनू ग़त्फ़ान ने समर्थन का वादा किया और छह हज़ार फ़ौजियों की गारंटी दी।

इसके बाद यहूदी क़बीला बनू सलीम के पास गया, जो पहले से ही मुसलमानों पर हमला करने की नीयत रखता था, लेकिन नाकाम रहा था। इतने बड़े सैन्य गठबंधन के हमले की खबर पाकर उन्होंने भी ख़ुशी से अपनी हामी भर दी।

(उद्धृत सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 363-364, प्रकाशन दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत) (ग़ज़वा ए अहज़ाब, आलिम मुहम्मद अहमद बाशमील, सफा 62, प्रकाशन नफीस अकैडमी, उर्दू बाजार, कराची)

इसी तरह बनू फ़ज़ारा अपने सरदार उयैना की क़ियादत में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से लड़ने के लिए तैयार हो गए और उयैना ने अपने दोस्त क़बीले बनू असद को दावत दी। इस पर बनू असद के सरदार तुलैहा असदी ने भी इस दावत को कुबूल कर लिया। इसके साथ ही बनू मुर्रा और बनू अशजअ क़बीलों ने भी इस जंग की फ़ौजी ताक़त में ख़ासा इज़ाफ़ा किया। ये सारे क़बीले पूरे अरब में अपनी बहादुरी के लिए मशहूर थे।

(उद्धृत सीरत एन्साइक्लोपीडिया, भाग 07, पृष्ठ 270-271, दारुस-सलाम, रियाज़)

इस तफ़सील को लिखते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) लिखते हैं कि मक्का के क़ुरैश और नज्द के क़बीले ग़त्फ़ान और सुलैम तो पहले से ही मुसलमानों के खून के प्यासे थे और मदीना पर हमला करने की सोच में रहते थे, लेकिन अब तक उन्होंने इस्लाम के खिलाफ़ अपनी ताक़तों को एकजुट नहीं किया था। जब यहूदी क़बीला बनू नज़ीर अपनी गद्दारी और फ़ित्ना परवरी की वजह से मदीना से निकाल दिया गया, तो उनके सरदारों ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के इस एहसान को भुलाते हुए, जो उन्होंने उन पर किया था, इस्लाम के ख़िलाफ़ अरब की समस्त ताक़तों को एकजुट करने की कोशिश की। चूंकि यहूदी लोग साज़िशों में माहिर थे, इसलिए उनकी फ़ित्ना परवर कोशिशें कामयाब हुईं, और अरब के क़बीलों ने मुसलमानों के खिलाफ़ एकजुट होकर मैदान में उतरने का फैसला किया।

यहूदी सरदारों में से सलाम बिन अबी अल-हुक़ैक, हुइय्य बिन अख़्तब और किनाना बिन अल-रबीअ ने इस जंग को भड़काने में अहम भूमिका निभाई। ये लोग अपने नए वतन ख़ैबर से निकल कर हिजाज़ और नज्द के क़बीलों के पास गए। सबसे पहले वे मक्का पहुंचे और क़ुरैश को अपने साथ मिलाया। क़ुरैश के सरदारों को खुश करने के लिए उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि "मुसलमानों के दीन से तुम्हारा दीन (शिर्क और बुतपरस्ती) बेहतर है।"

इसके बाद उन्होंने नज्द में जाकर क़बीला ग़त्फ़ान को अपने साथ मिलाया और इस क़बीले की शाखाओं फ़ज़ारा, मुर्रा और अशजअ को अपने साथ जंग के लिए तैयार कर लिया। क़ुरैश और ग़त्फ़ान की उकसाहट से बनू सुलैम और बनू असद भी इस इस्लाम विरोधी गठबंधन में शामिल हो गए। दूसरी तरफ यहूदियों ने अपने हलीफ क़बीला बनू सअद को भी अपने साथ खड़ा कर लिया। इस विशाल गठबंधन के अलावा, क़ुरैश ने अपने आस-पास के क़बीलों को भी अपने साथ मिला लिया। पूरी तैयारी के बाद, अरब के ये खूँखार क़बीले मुसलमानों को मिटाने के इरादे से मदीना की तरफ बढ़ आए और उन्होंने कसम खाई कि जब

तक इस्लाम का सफ़ाया नहीं कर लेंगे, वापस नहीं लौटेंगे।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, एम.ए, पृष्ठ 573-574)

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) इस बारे में वर्णन करते हैं कि "यहूद के दो क़बीले, जो लड़ाई और क़त्ल-ओ-ग़ारत की साज़िशों की वजह से मदीना से जला वतन कर दिए गए थे, उनमें से बनू नज़ीर का एक हिस्सा शाम की तरफ़ हिजरत कर गया और एक हिस्सा मदीना से उत्तर की तरफ ख़ैबर नामक शहर में बस गया। ख़ैबर यहूदियों का एक बड़ा केंद्र और क़िला बंद शहर था। यहां पहुँच कर बनू नज़ीर ने मुसलमानों के खिलाफ अरबों में उकसावे का काम शुरू किया। मक्का वाले तो पहले से ही दुश्मनी पर उतारू थे, उन्हें किसी और उकसावे की ज़रूरत नहीं थी। इसी तरह, नज्द का क़बीला ग़त्फ़ान, जो अरब में एक बड़ी हैसियत रखता था, पहले से ही मक्का वालों की दोस्ती में इस्लाम का दुश्मन बना हुआ था। अब यहूदियों ने क़ुरैश और ग़त्फ़ान के अलावा बनू सुलैम और बनू असद जैसे दो और बड़े क़बीलों को मुसलमानों के खिलाफ़ उकसाना शुरू किया। साथ ही, यहूदियों ने अपने हलीफ़ बनू सअद को भी काफ़िरों का साथ देने के लिए तैयार किया। लंबी तैयारी के बाद,

अरब के समस्त क़बीलों के इस बड़े गठबंधन की बुनियाद रखी गई, जिसमें मक्का और इसके आस-पास के क़बीले, नज्द और मदीना के उत्तर की तरफ़ के क़बीले और यहूदी शामिल थे। इन सब क़बीलों ने मिलकर मदीना पर हमला करने के लिए एक विशाल सेना तैयार की।"

(दीबाचा तफ़्सीर-उल-कुरआन, अनवारुल-उलूम, भाग 20, पृष्ठ 267)

क़ुरैश और दूसरे क़बीलों की जंग के लिए तैयारी और उनकी तादाद :

इस जंग में शामिल होने वाले क़ुरैश और दूसरे क़बीलों की तादाद का और तफ़सील से वर्णन कुछ इस तरह है। क़ुरैश मक्का से चार हज़ार की फ़ौज लेकर निकले, जिनकी क़ियादत अबू सुफ़ियान कर रहा था। सवारों की क़ियादत ख़ालिद बिन वलीद कर रहा था। उन्होंने दारुल नदवा में झंडा बांधा, जो क़ुरैश की मजलिस-ए-शूरा की जगह थी, और इसे उसमान बिन तलहा ने उठाया, जिन्होंने बाद में इस्लाम क़ुबूल कर लिया था। वे अपने साथ तीन सौ घोड़े और पंद्रह सौ ऊँट लेकर आए। बनू सुलैम के सात सौ लोग भी क़ुरैश के साथ आ मिले, जिनकी क़ियादत अबू सुफ़ियान बिन अब्द शम्स कर रहा था। बनू असद के लोग तुलैहा बिन ख़ुवैलेद की क़ियादत में निकले और बनू फ़ज़ारा के एक हज़ार लोग उयैना बिन हसन की क़ियादत में निकले। बनू अशजअ के चार सौ लोग निकले, और उनकी क़ियादत मसूद बिन रुख़ैला कर रहा था। बनू मुर्रा के चार सौ लोग निकले, जिनकी क़ियादत हारिस बिन औफ़ मुर्री कर रहा था। बनू ग़त्फ़ान की तरफ़ से छह हज़ार फ़ौजी भेजने का वादा किया गया था, और यहूदियों की तरफ़ से दो हज़ार से ज़्यादा रिज़र्व फ़ौज थी, जो इस बड़े लश्कर के पीछे एक आख़िरी वार करने के लिए तैयार खड़ी थी। इस तरह से इस जंग में शामिल होने वाले लोगों की कुल तादाद कम से कम दस हज़ार थी, और

हज़ार और कुछ रिवायतों के मुताबिक़ चौबीस हज़ार के क़रीब थी। इन सबकी क़यादत अबू सुफ़ियान बिन हरब के हाथ में थी, जो उस वक़्त तक की तारीख़-ए-अरब की सबसे बड़ी फ़ौजी मुहिम थी।

(हयात-ए-मुहम्मद, मुहम्मद हुसैन हैकल, पृष्ठ 434, प्रकाशन बुक कॉर्नर, झेलम) (सिबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 364, दारुल् कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरुत) (ग़ज़वा-ए-अहज़ाब, आलिमा मुहम्मद अहमद बाशमील, पृष्ठ 153, प्रकाशन नफ़ीस अकैडमी, उर्दू बाजार कराची) (फ़रहंग-ए-सीरत, सफ़ा 299, ज़वार अकैडमी, कराची)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) इस बारे में लिखते हैं :

"कुफ़्फ़ार के इस अज़ीम लश्कर का अंदाज़ा दस हज़ार से पंद्रह हज़ार, बल्कि कुछ रिवायतों के मुताबिक़ चौबीस हज़ार तक लगाया गया है। अगर दस हज़ार का अंदाज़ा ही सही माना जाए, तो भी उस दौर के हिसाब से यह संख्या इतनी बड़ी थी कि शायद इससे पहले अरब की क़बाइली जंगों में इतनी बड़ी तादाद कभी किसी जंग में शामिल नहीं हुई होगी। ... पूरे लश्कर का सरदार-ए-आज़म अर्थात सिपहसालार अबू सुफ़ियान बिन हरब था... ख़ुराक और जंग का सामान भी हर तरह से काफ़ी और मुकम्मल था। इस तरह यह लश्कर शवाल 5 हिजरी के दौरान (फ़रवरी/मार्च 627 ईसवी) मदीना की तरफ़ बढ़ना शुरू हुआ।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, एम.ए., पृष्ठ 574)

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) इस बारे में वर्णन करते हैं: "मुख़्तलिफ़ मोअर्रिख़ों ने इस लश्कर की संख्या दस हज़ार सेचौबीस हज़ार तक बताई है, लेकिन ज़ाहिर है कि पूरे अरब के इत्तिहाद कानतीजा सिर्फ़ दस हज़ार सिपाही नहीं हो सकता। यक़ीनन चौबीस हज़ार वाला अंदाज़ा ज़्यादा सही है, और अगर कुछ नहीं तो यह लश्कर कम से कम अठारह से बीस हज़ार का ज़रूर होगा। मदीना एक मामूली क़स्बा था। इस क़स्बे के खिलाफ़ पूरे अरब का हमला कोई मामूली हमला नहीं था। मदीना के मर्दों को जमा कर के (जिनमें बूढ़े, जवान और बच्चे भी शामिल हों) मुश्किल से तीन हज़ार आदमी निकल सकते थे। इसके मुक़ाबले में दुश्मन की फौज बीस से चौबीस हज़ार के बीच थी, और वे सारे के सारे जंगजू थे, जवान और लड़ने के क़ाबिल थे। क्योंकि जब शहर में रह कर हिफ़ाज़त का सवाल होता है, तो उसमें बच्चे और बूढ़े भी शामिल हो जाते हैं, लेकिन जब दूर-दराज़ से लश्कर हमला करने आता है, तो उसमें सिर्फ़ जवान और ताक़तवर लोग होते हैं। इसलिए यह यक़ीनी है कि कुफ़्फ़ार के लश्कर में बीस या पच्चीस हज़ार, जितने भी लोग थे, वो सब के सब ताक़तवर, जवान और तजुर्बेकार सिपाही थे। परंतु मदीना के कुल मर्दों की तादाद बच्चों और अपाहिजों को मिलाकर मुश्किल से तीन हज़ार थी। जाहिर है कि इन हालात को देखते हुए अगर मदीना के लश्कर की तादाद तीन हज़ार मानी जाए, तो दुश्मन की तादाद चालीस हज़ार समझनी चाहिए। क्योंकि मुक़ाबला कोई नहीं था, और अगर दुश्मन की तादाद बीस हज़ार मानी जाए, तो मदीना के सिपाहियों की तादाद सिर्फ़ डेढ़ हज़ार समझी जानी चाहिए।"

(दीबाचा तफ़्सीरुल् कुरआन, अनवारुल् उलूम, भाग 20, पृष्ठ 267-268)

बहरहाल, काफ़िर अपनी जंग की नीयत से आगे बढ़ते रहे और इसकी जानकारी जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिली, तो आपने फ़ैसला किया कि ख़ंदक खोदी जाए।

इसकी तफ़सील में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जासूसी अर्थात इंटेलिजेंस नेटवर्क भी इस पूरी स्थिति से बेख़बर नहीं था और चारों तरफ़ से ख़बरें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंच रही थीं। क़ुरैश और यहूद के इस ख़तरनाक मंसूबे की खबर मदीना में पहुंची, तो आपने सहाबा को जमा किया और उन्हें दुश्मन की बुरी नीयत के बारे में बताया। साथ ही उनसे मशविरा किया कि मदीना से निकलकर मुक़ाबला किया जाए या यहीं रहकर उनसे जंग की जाए। एक बड़े फ़ौजी लश्कर और उसकी बड़ी तादाद को देखते हुए ज़्यादातर राय यह आई कि मदीना के अंदर रहकर दिफ़ा (रक्षा) करना ज़्यादा मुनासिब होगा। रिवायतों के मुताबिक़, हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की राय का वर्णन मिलता है कि उन्होंने ख़ंदक का मशवरा दिया और कहा, "हे रसूलुल्लाह! हम फ़ारस की ज़मीन पर जब घोड़ों की फौज से डरते थे, तो उनके आगे ख़ंदक खोदते थे ताकि वे उसे पार न कर सकें।" यह राय सबको पसंद आई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना के अंदर रहकर दिफ़ा करने और ख़ंदक खोदने का हुक्म दिया।

कुछ सीरत की किताबों से मालूम होता है कि ख़ंदक खोदने का फ़ैसला केवल हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की राय की वजह से नहीं था, बल्कि अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस तरीक़े का इल्हाम किया था, क्योंकि अरबों के लिए यह तरीका बिल्कुल नया था। वे इस दिफ़ाई रणनीति से नावाकिफ़ थे। लिहाज़ा, जब अबू सुफ़ियान ताक़त के नशे में चूर होकर एक बड़े लश्कर के साथ मदीना पर हमला करने निकला और उसे मदीना की तरफ़ से कोई रुकावट नज़र नहीं आई, न ही उसे कोई इस्लामी फ़ौज दिखाई दी, तो उसे अपने बड़े लश्कर की वजह से यह घमंड हो गया कि अब मदीना को कोई नहीं बचा सकता। उसने कहा, "अब मैं मदीना को तबाह करके ही जाऊंगा।" जब उसे रास्ते में कहीं कोई विरोध नहीं मिला, तो उसका घमंड और भी बढ़ गया, लेकिन जैसे ही उसने अपने घोड़ों को दौड़ाते हुए मदीना के क़रीब पहुंचाया, तो अचानक उसके सामने पांच किलोमीटर लंबी, आठ-नौ फीट गहरी और चौड़ी एक ख़ंदक देखकर वह हक्का-बक्का रह गया। यह ख़ंदक इतनी गहरी और चौड़ी थी कि उसे घोड़ों से पार करना मुमकिन नहीं था।

जब काफ़िर इस ख़ंदक को पार करने में नाकाम रहे, तो अबू सुफ़ियान ने अपने शदीद ग़ुस्से, बेबसी और घमंड के मिले-जुले जज़्बात में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक ख़त लिखा। उसमें उसने लिखा, "लात, उज़्ज़ा, इसाफ़, नायला और हुब्बल की क़सम है कि मैं अपने लश्कर के साथ आया हूं और तब तक वापस नहीं जाऊंगा, जब तक तुम्हें मिटा न दूं। लेकिन मैं देख रहा हूं कि तुम लोग हमारे मुक़ाबले से बच रहे हो और अपने चारों तरफ़ ख़ंदकें खोद ली हैं। काश, मुझे पता होता कि तुम्हें यह तरीका किसने बताया है। और अगर हम वापस भी चले गए, तो याद रखना, जंग-ए-उहुद का दिन तुम्हें फिर याद दिलाएंगे, जिसमें अब तुम्हारी औरतों को भी ज़बह कर दिया जाएगा।" यह ख़त उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में भेजा।

इसके जवाब में नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू सुफ़ियान को ख़त लिखा और फ़रमाया, "तुम्हारा ख़त मिला। मैं जानता हूँ कि तुम हमेशा से अल्लाह तआला के ख़िलाफ़ घमंड में रहे हो। और जो तुमने मदीना पर अपने बड़े लश्कर के साथ हमला करने का वर्णन किया है, जिससे तुम हमारा नाम-ओ-निशान मिटा देने का इरादा किए हुए हो, तो यह अल्लाह का हुक्म है जो तुम्हारे नापाक इरादों के बीच आ गया है। तुम्हें यह मौका नहीं मिल सका। और अल्लाह तआला ऐसा फ़ैसला करेगा कि तुम लात और उज़्ज़ा का नाम तक भूल जाओगे।"

फिर आपने लिखा, "और जो तुमने पूछा है कि ख़ंदक खोदने का तरीक़ा मुझे किसने बताया, तो 'फ़-इन्न-ल्लाह अल्हमानी ज़ालिक' (यह तरीका मुझे अल्लाह तआला ने इल्हाम किया है)। जब तुम्हारा और तुम्हारे साथियों का ग़ुस्सा बढ़ गया था, उस समय अल्लाह तआला ने मुझे यह बताया। और सुनो! अंततः अल्लाह हमें कामयाब करेगा। और ऐ बनू-ग़ालिब के अहंकारी! याद रखो, एक दिन आएगा जब तुम्हारे लात, उज़्ज़ा, इसाफ़, नाइला और हुब्बल टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएंगे, और उस दिन मैं तुम्हें यह सब याद दिलाऊंगा।"

(सबुलुल् हुदा , भाग 5, पृष्ठ 364, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत) (ख़ातिम अल्-नबिय्यीन, अबू ज़हरा, भाग 2, पृष्ठ 942, अल-मुअत्तमर अल-आलमी)(अल-सहीह मिन सीरह अल-नबी अल-आज़म सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, भग 10, पृष्ठ 197, अल-मर्कज़ अल्-इस्लामी, बेरूत 2006)

तो बहुत स्पष्ट रूप से लिखा कि इंशाअल्लाह, अल्लाह की मदद से फ़तह हमारी होगी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस ख़त से यह स्पष्ट होता है कि हालाँकि हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मशविरा दिया होगा, लेकिन इस पर अमल करने का फ़ैसला आपने इल्हामन ही किया होगा। वल्लाहु आलम। बहरहाल, उनका मशविरा भी था, लेकिन अल्लाह तआला ने भी आपको इस बारे में आगाह किया। बाकी तफ़सील इन शा अल्लाह आइंदा वर्णन करूंगा।"

आजकल पाकिस्तान के अहमदियों को ख़ास तौर पर दुआओं में याद रखें। पाकिस्तानी अहमदी ख़ुद भी दुआओं और सदक़ात की तरफ़ तवज्जो दें। अल्लाह तआला उनकी हिफ़ाज़त करे और मुख़ालेफ़ीन के शर से उन्हें महफ़ूज़ रखे, और बुरे लोगों का शर उन्हीं पर पलट दे। आम तौर पर दुनिया की भलाई के लिए भी दुआ करें कि अल्लाह तआला दुनिया को भी फ़साद और फ़ित्नों से महफ़ूज़ रखे।

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान

27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार “अख़बार बदर” 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "पहली बार जब रौशनी निकली, तो हिरा और किसरा के महल मुझे दिखाए गए थे और जिब्राईल ने मुझ से कहा कि आपकी उम्मत इन पर क़ब्ज़ा करेगी। दूसरी बार रौशनी में मुझे रूम (रोम) की ज़मीन के सुर्ख महल दिखाए गए, और जिब्राईल ने ख़बर दी कि आपकी उम्मत उन पर क़ाबिज़ होगी। और तीसरी बार जब रौशनी निकली, तो सनआ के महल मुझे दिखाए गए और जिब्राईल ने बताया कि आपकी उम्मत उन पर भी ग़ालिब आएगी। इसलिए आपको मुबारकबाद हो।"

ख़ंदक (खाई) खोदने के दौरान हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिरकत और उनकी दुआओं की बरकत से सहाबा-ए-किराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम अपनी परेशानियों और मेहनत की तकलीफ़ों को भूल जाते थे।

ग़ज़वा-ए-अहज़ाब के लिए ख़ंदक की खुदाई और इसके दौरान पेश आने वाले कुछ मोज़िज़ों (चमत्कारों) का वर्णन

अहमदियों के ईमान को मज़बूत करने और दुनिया के आम हालात के लिए दुआओं की तल्क़ीन (प्रोत्साहन)

अल्लाह तआला सब ताक़तों का मालिक है, अगर ये लोग अब भी सुधार की तरफ़ तवज्जो करें, तो अल्लाह तआला उन्हें मुसीबतों से निकाल सकता है। अल्लाह तआला करे कि उन्हें अक़्ल और समझ आ जाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 सितंबर 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिरें (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ . اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ . مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ . غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-अहज़ाब पिछले ख़ुतबे में वर्णन हो रहा था कि किस तरह ख़ैबर के यहूदियों की अहद-शिकनी (वादा-ख़िलाफ़ी) और दुश्मनी की वजह से काफ़िरों का एक लश्कर (सेना) तैयार हुआ ताकि मुसलमानों पर हमला करके उन्हें ख़त्म किया जा सके। इसकी और भी तफ़सील (विवरण) तारीख़ से यूँ मिलती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सुलैत और सुफ़ियान बिन औफ़ असलमी को लश्करों की ख़बर लाने के लिए भेजा, तो ये दोनों रवाना हुए। जब ये बैदा के मक़ाम पर पहुँचे बैदा, मक्का और मदीना के बीच ज़ुल-हलीफ़ा से आगे एक मैदान है, और ज़ुल-हलीफ़ा मदीना से छह-सात मील की दूरी पर है। बहरहाल, इन दोनों की तरफ़ अबू सुफ़ियान के सवारों ने तवज्जो की (ध्यान दिया), और दुश्मन की नज़र इन पर पड़ गई। नतीजा यह हुआ कि दोनों लड़ते हुए शहीद हो गए। दोनों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास लाया गया और एक ही क़ब्र में दफ़्न किया गया।

लिखा है कि जब ख़ंदक (खाई) खोदने का फ़ैसला हो गया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने घोड़े पर सवार हुए और आपके साथ कई मुहाजेरीन (विस्थापित) और अंसार (सहायक) भी थे। आपने लश्कर के पड़ाव के लिए जगह तलाश की और सबसे मुनासिब जगह ये देखी कि आप सलाअ पहाड़ को अपनी पीठ की तरफ़ रखें और मज़ाज़ से ज़ुबाब और रातिज तक ख़ंदक खोदी जाए।

मज़ाज़ मदीना में सलाअ पहाड़ के क़रीब एक जगह थी, और ज़ुबाब मदीना के क़रीब एक पहाड़ का नाम था। रातिज मदीना के क़िलों में से एक क़िला था, जो यहूदियों का था। यह भी कहा जाता है कि ज़ुबाब के मशरिक (पूर्व) में एक छोटा पहाड़ था। उस दिन ख़ंदक का काम शुरू हुआ और मुसलमानों ने बनू क़ुरैज़ा से खुदाई के कई औज़ार कुदालें, बड़े कुल्हाड़े, बेलचे इत्यादि उधार लिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ंदक के हर हिस्से की खुदाई एक क़ौम के सुपुर्द की। आपने सहाबा को दस-दस के ग्रुप में तक़सीम (विभाजित) किया और हर दस अफ़राद के लिए करीबन चालीस गज़ का हिस्सा निर्धारित किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुद भी खुदाई में हिस्सा लिया और मिट्टी अपनी पीठ पर उठाई, यहाँ तक कि आपकी पीठ और पेट धूल से ढक गए।

जो मुसलमान अपना हिस्सा पूरा कर लेते, वे दूसरों की मदद के लिए पहुँच जाते, यहाँ तक कि ख़ंदक पूरी हो गई। ऐसा नहीं था कि एक का काम ख़त्म हो गया तो वह बैठ गया, बल्कि अपने साथियों की मदद के लिए पहुँच जाते थे। ख़ंदक खोदने में कोई भी मुसलमान पीछे नहीं रहा, और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को जब टोकरी नहीं मिलती, तो वे जल्दी में अपने कपड़ों में मिट्टी ढोते थे। चादर में मिट्टी डालकर ले जाते थे।

(उद्धृत सबुलल् हुदा वल् रिशाद', भाग 4, पृष्ठ 365-364, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत)(फ़रहंग-ए-सिरत, पृष्ठ 265 ,129 ,125 ,105 ज़वार अकादमी, कराची)(ख़ुलासा अल-वफ़ा ब-अख़बार दाररुल् मुस्तफ़ा, पृष्ठ -553 554 मक्तबा अल्-इल्मिया, मदीना मुनव्वरा)

इसकी तफ़्सील (विवरण) हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने भी वर्णन की है। कहते हैं कि "इतने बड़े लश्कर की हरकतों को छुपाना काफ़िरों के लिए मुश्किल था, और फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का जासूसी का इंतेज़ाम भी निहायत मजबूत था। चूंकि क़ुरैश का लश्कर मक्का से निकला ही था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उनकी ख़बर पहुँच गई। जिस पर आपने सहाबा को इकट्ठा कर के इस पर मशवरा किया। इस मशवरे में ईरान के एक वफ़ादार सहाबी सलमान फ़ारसी भी शामिल थे... क्योंकि सलमान फ़ारसी अजमी तरीक़-ए-ज़ंग से वाक़िफ़ थे।" अर्थात जो गैर अरबों का तरीक़-ए-ज़ंग था, उसके बारे में जानते थे। "उन्होंने यह मशवरा पेश किया कि मदीना के गैर-महफ़ूज़ हिस्से के सामने एक लंबी और गहरी ख़ंदक खोदकर अपने आपको महफ़ूज़ कर लिया जाए। ख़ंदक का ख़्याल अरबों के लिए बिल्कुल नया था। लेकिन यह जानकर कि यह तरीक़-ए-ज़ंग दियार-ए-आजम (गैर अरब देशों) में आम तौर पर सफलता के साथ रिवाज है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस तजवीज़ को मंज़ूर फ़रमाया।"

पिछले ख़ुतबे में भी वर्णन हुआ था कि आपको अल्लाह तआला ने भी बताया था कि यह तरीक़ सही है। बहरहाल, लिखा है कि "और चूंकि मदीना का शहर तीन तरफ से एक हद तक महफ़ूज़ था, अर्थात मकानों की लगातार दीवारों और घने पेड़ों और चट्टानों के सिलसिले की वजह से ये इर्द-गिर्द काफ़िरों के लश्कर के अचानक हमले से महफ़ूज़ थीं और सिर्फ़ शामी तरफ़ ऐसी थी जहाँ दुश्मन इकट्ठा होकर मदीना पर हमला कर सकता था, इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस गैर महफ़ूज़ तरफ़ में ख़ंदक खोदने का हुक्म दिया। आपने ख़ुद अपनी निगरानी में मौके पर निशान लगाकर तक़सीम-ए-कार के उसूल के तहत ख़ंदक को दस-दस हाथ अर्थात पंद्रह-पंद्रह फ़ुट के टुकड़ों में तक़सीम करके हर टुकड़ा दस-दस सहाबियों के सुपुर्द कर दिया। इन पार्टियों की तक़सीम में एक ख़ुशगवार इख़्तिलाफ़ (विभाजन) पैदा हुआ कि सलमान फ़ारसी किस समूह में शामिल किए जाएँ।" हर समूह चाहता था कि सलमान फ़ारसी उसमें शामिल हों। "क्या उन्हें मुहाजिर समझा जाए या इस

वजह से कि वह इस्लाम की आमद से पहले ही मदीना में आए हुए थे, अंसार में शामिल किया जाए। इस वजह से कि सलमान इस तरीक़-ए-ज़ंग के प्रेरक थे और वैसे भी एक सक्रिय और बावजूद बूढ़े होने के मज़बूत आदमी थे, हर समुदाय उन्हें अपने साथ मिलाना चाहता था। आखिर यह इख़्तिलाफ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश हुआ और आपने दोनों के दावे सुनकर।" हर एक ने जो दावा किया था, आपने सुना और फिर "मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि सलमान दोनों में से नहीं हैं।" न वह मुहाजिरों में से हैं, न अंसार में से। "बल्कि سَلۡمَانُ مِنَّا اَهۡلَ الۡبَیۡتِ" अर्थात सलमान मेरे अहल-ए-बैत (परिवार) में शामिल किए जाएँ।"

उस वक्त से सलमान को यह शरफ़ हासिल हो गया कि वह गोया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के घर के आदमी समझे जाने लगे।

उद्देश्य, ख़ंदक की तजवीज़ पुख़्ता होने के बाद सहाबा की जमाअत मज़दूरों के कपड़ों में मलबूस होकर मैदान-ए-कारज़ार में निकल आई। ख़ुदाई का काम कोई आसान काम नहीं था, यह बहुत मुश्किल काम था। और फिर यह मौसम भी सर्दी का था, जिसकी वजह से इन दिनों में सहाबा ने कठोर तकालिफ़ उठाईं। और चूंकि दूसरे कारोबार बिल्कुल बंद हो गए थे, इसलिए वे लोग जिनका काम रोज़ की रोटी रोज़ कमाना था, और सहाबा में ऐसे लोगों की कमी नहीं थी, उन्हें इन दिनों में भूख और फाकाकशी की मुसीबत भी सहनी पड़ी। और चूंकि सहाबा के पास नोक़र और गुलाम भी नहीं थे, इसलिए सभी सहाबा को खुद अपने हाथ से काम करना पड़ा। जो दस-दस की टोलीयाँ तय हुई थीं, उन्होंने अपने काम की आंतरिक तक़सीम इस तरह की थी कि कुछ आदमी खुदाई करते थे और कुछ खुदी हुई मिट्टी और पत्थरों को टोकरी में भरकर अपने कंधों पर लादकर बाहर फेंकते जाते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी अधिकांश अपना समय ख़ंदक के पास गुज़ारते थे और कई बार खुद भी सहाबा के साथ मिलकर खुदाई और मिट्टी की ढुलाई का काम करते थे।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब, एम. ए, पृष्ठ 575-574)

खंदक की खुदाई के दौरान ताज़ा दम रखने के लिए शेर भी पढ़े जाते थे। इसकी तफ़्सील में लिखा है कि सहल बिन साद और अनस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे पास पधारे तो हम खंदक खोद रहे थे और अपने कंधों पर मिट्टी स्थानांतरित कर रहे थे। जब आपने हमारी यह मेहनत और भूख देखी, तो फ़रमाया:

اَللّٰهُمَّ لَا عَیۡشَ اِلَّا عَیۡشُ الۡاٰخِرَهۡ
فَاغۡفِرِ الۡاَنۡصَارَ وَالۡمُهَاجِرَهۡ

कि "हे अल्लाह! जीने का आनंद तो सिर्फ़ خآरित का आनंद है। इसलिए तू अंसार और मुहाजिरों को माफ़ कर दे।" इस पर सहाबा कराम ने आपको जवाब देते हुए कहा:

نَحۡنُ الَّذِیۡنَ بَایَعُوۡا مُحَمَّدَا
عَلَی الۡجِهَادِ مَا بَقِیۡنَا اَبَدَا

कि "हम वे लोग हैं जिन्होंने जिहाद पर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बैअत की है, जब तक हम ज़िंदा हैं।"

हज़रत बराअ बिन आज़िब से रिवायत है, वह वर्णन करते हैं कि ...

खंदक के दिन मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मिट्टी उठाते देखा।

यहां तक कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माथे मुबारक की सफेदी मिट्टी में छिप गई। मैंने आपको इब्न रवाा के यह शेर पढ़ते सुना :

وَاللّٰهِ لَوۡلَا مَا اهۡتَدَیۡنَا
وَلَا تَصَدَّقۡنَا وَلَا صَلَّیۡنَا
فَاَنۡزِلَنۡ سَکِیۡنَةً عَلَیۡنَا
وَثَبِّتِ الۡاَقۡدَامَ اِنۡ لَاقِیۡنَا
وَالۡمُشۡرِکُوۡنَ قَدۡ بَغَوۡا عَلَیۡنَا
اِذَا اَرَادُوۡا فِتۡنَةً اَبَیۡنَا

अर्थात, "हमारे मौला! अगर तेरा फज़ल न होता तो हमें हिदायत नसीब नहीं होती और हम सदका और खैरात करने और तेरी इबादत करने के काबिल न बनते। तो ऐ खुदा! जब तूने हमें इस हद तक पहुँचाया है तो अब इस मुसीबत के समय में हमारे दिलों को सुकून अता कर और अगर दुश्मन से मुकाबला हो तो हमारे कदमों को मजबूत रख। तू जानता है कि ये लोग हमारे खिलाफ ज़ुल्म और तअदी के रंग में हमला कर रहे हैं और उनकी नीयत हमें अपने दीन से बे-दीन करना है, लेकिन ऐ हमारे खुदा! तेरे फ़ज़ल से हमारा ये हाल है कि जब वह हमें बे-दीन करने के लिए कोई उपाय अपनाते हैं, तो हम उनके उपाय को दूर से ही ठुकरा देते हैं और उनके फितने में पड़ने से इंकार करते हैं।"

"اَبَیۡنَا اَبَیۡنَا" पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऊंची आवाज़ करते।

एक रिवायत में है कि शेर के आखिरी पर आवाज को लंबा करते।

बहरहाल, खंदक की खुदाई एक मेहनत की मांग करने वाला काम था और अन्य सहाबा की तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी खंदक की खुदाई में साथ थे। कभी कुदाल चलाते और कभी बेलचों से मिट्टी जमा करते और कभी टोकरी में मिट्टी उठाते। एक दिन आपको बहुत ज़्यादा थकावट हो गई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बैठ गए। फिर आपने अपने बाएं पहलू पर पत्थर का सहारा लिया और आपको नींद आ गई। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आपके सरहाने खड़े होकर लोगों को आपके पास से गुज़रने से रोकते रहे कि कहीं वे आपको जगा न दें। जब कुछ देर बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जागे तो जल्दी से उठे और फ़रमाया, "तुमने मुझे जगाया क्यों नहीं किया? मैं सोया हुआ था, मुझे जगाया क्यों नहीं?" और फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बड़ा कुल्हाड़ा उठाकर ज़मीन पर मारने लगे, अर्थात काम शुरू कर दिया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिरकत और आपकी दुआओं की बरकत से सहाबा तो मानो अपने ग़म और मेहनत की क़ल्फ़त को भूल ही जाते थे।

और जहाँ एक तरफ पाकीज़ा शेर-ख़्वानी होती, वहीं दूसरी तरफ हल्का-फुल्का मज़ाक भी जारी रहता। चूंकि एक बार हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो, जो कि कमसिन नौजवान थे, खंदक खोदते-खोदते खंदक के अंदर ही सो गए, तो उनके एक साथी ने उनका खुदाई का सामान मज़ाक में उठा लिया। जब वे जागे तो अपना साज़ो-सामान न पाकर घबरा गए, जबकि दूसरे दोस्त इस परेशानी से मज़ा लेने लगे। नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को जब जानकारी हुई तो आपने हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़रमाया: "लड़के, तुम ऐसे सोए कि अपने सामान की भी ख़बर न हुई।" एक रिवायत के मुताबिक, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुद हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास तशरीफ़ लाए और मुस्कुराते हुए फ़रमाया : "हे अबी रुक़ादिन! ऐ नींद के माते!" बेशक साथ ही इस तरह के मज़ाक की भी हकीमाना अंदाज़ में इस्लाह फ़रमाई और फ़रमाया कि "ज़ैद के सामान की किसी को ख़बर है?" तो एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि "हज़ूर, मेरे पास इसका सामान है और मैंने ही उठाया था।" आपने फ़रमाया कि "किसी मुसलमान को इस तरह परेशान नहीं करना चाहिए कि उसके हथियार और औज़ार उठा लिए जाएं।"

(सीरतुल् हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 420) (सब्लुल् हुदा भाग4 पृष्ठ 367-365 प्रकाशन दारुल कुतुब इलमिया बैरूत) (उम्ताअ अस्मा भाग1 पृष्ठ 227 दारुल कुतुब इलमिया बैरुत)

सहाबा की लगातार शबाना रोज़ मेहनत और हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दुआओं की बरकत से यह खंदक पूरी हो गई। मुसलमानों ने खंदक खोदकर इसे पुख़्ता कर दिया।

खंदक की तकमील कितनी मियाद में हुई?

इस बारे में रिवायतें हैं। 6 दिन, 10 दिन, 15 दिन, 20 दिन और 1 महीना। यह मियाद वर्णन की जाती है। 15 दिन और 1 महीने के बारे में ज़्यादा इत्तेफाक किया जाता है।

(सीरतुल् हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 422 दारुल कुतुब इलमिया बैरूत)

इस खंदक की लंबाई तकरीबन 6000 गज़ या कोई साढ़े तीन मील थी, चौड़ाई नौ हाथ और गहराई सात हाथ।

एक हाथ डेढ़ फ़ुट का वर्णन किया जाता है, इस तरह चौड़ाई तेरह चौदह फ़ुट और गहराई दस ग्यारह फ़ुट बनती है।

(एटलस सिरत नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 278 प्रकाशन दारुस् सलाम) (गज़वा अहज़ाब पृष्ठ 171 नफीस अकेडमी कराची) (अल् सहीह मीन सिरत अल् नबी अल् आज़म सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 10 पृष्ठ 208 अल् मार्कज़ अल् इसलामी लिदरासात)

यह तवील व अरीज़ खंदक सदियों तक मौजूद रही।

यहां तक कि वादी बठान के पानी के लगातार बहाव और काटने की वजह से वह आहिस्ता-आहिस्ता मादुम होती गई। बठान जो है, यह भी मदीना के तीन मशहूर वादियों में से एक वादी है। बाकी दो वादियाँ अकीक और वादी क़नात हैं।

(फरहंग सिरत पृष्ठ 59-58 ज़वार अकेडमी कराची)

वह खंदक कुछ तो लोगों ने भर दी थी ताकि इसके आर-पार जाने के लिए रास्ते

बन जाएं और बाकी मादुम वादी बठान के नाले की भल से भर गई। भल कहते हैं, दरिया से बारिशों का जो पानी आता है, उसके साथ मिट्टी आती है, वह जमा होती रहती है, इसी से भर गई।

छठी सदी हिजरी के प्रसिद्ध मुहासिर मदीना हाफ़िज़ इब्न नज्जार लिखते हैं कि जहाँ तक खंदक का ताल्लुक है, वह आज भी हमारे दौर में मौजूद है। हालांकि इसने एक नाले की शक्ल इख्तियार कर ली है। इसकी दीवार बहुत सारी जगहों से मुँहदिम हो चुकी है और खजूर के पेड़ों की काफ़ी संख्या इसके अंदर उग चुकी है।

नौवीं सदी हिजरी के एक लेखक लिखते हैं कि आज इस खंदक में से कुछ भी नहीं बचा। छह सौ साल तक तो यह क़ायम रही। नौवीं सदी में वह कहता है कोई निशान नहीं सिवाए इसके कि इसका महल वक़्त इस नदी से मालूम पड़ जाता है, जो कि वादी बठान का हिस्सा है और इसकी जगह बह रही है।

(जस्तजूए मदीना पृष्ठ 405 ओरिएंटल पब्लिकेशंस पाकिस्तान)

लिखा है कि हरचंद कि मदीना में ये दिन ख़ौफ और परेशानी के थे, मुनाफ़िक़ीन बहाने बना कर अपने-अपने डेरों और घरों की तरफ जाने लगे थे। लेकिन सहाबा का आम जोश और वलवला काबिल-ए-द्दष्ट था। बच्चे और औरतें भी उनके कंधे से कंधा मिला कर उनकी हिम्मत बढ़ाने और सहायता करने में आगे थीं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अज़्वाज-ए-मुतह्हिरात भी खतरे की इस घड़ी में अज़्म और हिम्मत के साथ मर्दाना तौर पर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ खड़ी नजर आती थीं। खंदक चूंकि मदीना से बाहर खोदी जा रही थी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अक्सर यहीं रहते थे, और मदीना की औरतों और बच्चों को मदीना में कुछ मजबूत किलों में स्थानांतरित कर दिया गया था, इसीलिए कभी-कभी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास तशरीफ़ ले आतीं और कुछ दिन रहतीं। फिर हज़रत उम सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा कुछ दिन रहतीं। फिर हज़रत जैनब रज़ियल्लाहु अन्हा कुछ दिन रहतीं और बाकी सभी अज़्वाज-ए-मुतह्हिरात बनू हारिसा के मजबूत किले में थीं और कुछ ने कहा कि अज़्वाज-ए-मुतह्हिरात बनू ज़ुरैक़ के किले नसर में थीं और कहा गया है कि कुछ अज़्वाज-ए-मुतह्हिरात फ़ारिक में थीं। ये विभिन्न रिवायतें हैं। फ़ारिक जो है, यह मदीना में हज़रत हस्सान बिन थाबित रज़ियल्लाहु अन्हा का किला था।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद भाग 4 पृष्ठ 367 दारुल कुतुब इलमिया बैरूत)
(फरहंग सिरत पृष्ठ 223 ज़वार अकेडमी कराची)

खंदक की खोदाई के समय कुछ मुआजिज़ात भी हुए। इनमें से एक घटना यह है कि खोदाई के दौरान चट्टान न टूटने वाला वाक़िया भी वर्णन किया जाता है। रिवायत में है कि खंदक की खोदाई के दौरान एक सख्त और पत्थरीली जगह आ गई और सहाबा ने सख्त कोशिश के बावजूद उस जगह की खोदाई से आजिज आ गए। आखिर उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास जाकर फर्याद किया। आपने कुदाल ली और उस जगह मारी तो वह पत्थरीली ज़मीन रेत की तरह भरभरा गई। एक रिवायत में युं है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुछ पानी मंगवाया और उसमें अपना लार डाल दिया। फिर आपने अल्लाह तआला से दुआ मांगी और इसके बाद यह पानी उस पत्थरीली ज़मीन पर छिड़क दिया। वहां जो सहाबा उस समय मौजूद थे, उनमें से कुछ कहते हैं कि कसम है उस ज़ात की जिस ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सच्चाई दे कर ज़ाहिर किया है कि यह पानी पड़ते ही वह ज़मीन मुलायम होकर रेत की तरह हो गई।

(सीरतुल् हल्बिया भाग 2 पृष्ठ 420 दारुल कुतुब इलमिया बैरूत)

यह वाक़िया दूसरा है जहां बादशाहतों की ख़ुशखबरी दी गई थी। वह दूसरा वाक़िया इस तरह वर्णन हुआ है। पहला वाक़िया जो था वह पानी डालने का था और यह वह है जिसमें आपको आने वाली बादशाहतों की खुशखबरी दी गई।

इसके बारे में लिखा है कि एक और अवसर पर वर्णन है कि हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से एक चट्टान टूट नहीं रही थी, तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु से कुदाल ले ली और एक प्रहार किया तो एक बिजली जैसी चमक प्रकट हुई। आप ने कहा : अल्लाहहु अकबर! पास खड़े सहाबा ने भी अल्लाहहु अकबर! कहा और उसका एक हिस्सा टूट गया। फिर आपने दूसरी बार प्रहार किया और उसमें से चमक निकली। आपने कहा : अल्लाहु अकबर! और चट्टान का कुछ और हिस्सा टूट गया। फिर आपने तीसरी बार प्रहार किया तो चट्टान का बाकी हिस्सा भी टूट गया और उसमें से फिर एक चमक निकली, तो आपने अल्लाहहु अकबर! कहा। सहाबा ने भी हर बार अल्लाहु अकबर! कहा। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु जो पास ही खड़े थे, उन्होंने निवेदन किया: हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! जब आप कुदाल से प्रहार करते थे, तो चट्टान से एक रोशनी निकलती थी और आपने अल्लाहहु अकबर भी कहा था। इस पर आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हे सलमान! क्या तुमने भी रोशनी को देखा है? तो उन्होंने कहा : जी हां, हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मैंने भी देखी थी। इस पर आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया :

पहली बार जब रोशनी निकली थी, तो हिरा और किसरा के महल मुझे दिखाए गए थे और जिब्राइल ने मुझसे कहा कि आपकी उम्मत इस पर काबिज होगी। दूसरी बार रोशनी में अरद-ए-रूम के लाल महल मुझे दिखाए गए और जिब्राइल ने खबर दी कि तुम्हारी उम्मत इस पर काबिज होगी। और तीसरी बार जब रोशनी निकली, तो सना के महल मुझे दिखाए गए और जिब्राइल ने बताया कि तुम्हारी उम्मत इन पर भी ग़ालिब आ जाएगी। इसलिए तुम्हें खुशखबरी हो।

और सब ने कहा अल्हमदुलिल्ला! सच्चा वादा है। अल्लाह तआला ने तंगी के बाद हमसे मदद का वादा किया है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ारिस के महलों की निशानियाँ सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु को वर्णन करने लगे, तो सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : हे रसूलुल्लाह! आपने सच कहा है, यही इसकी निशानी है। अर्थात जिस तरह आपने बताया था कि ये उनकी निशानियाँ हैं, हज़रत सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसकी तस्दीक की। कहने लगे :

मैं गवाही देता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हे सलमान! ये फतूहात अल्लाह तआला मेरे बाद देगा। शाम को फ़तह किया जाएगा और हिरक्ल अपने राज्य के आख़िर तक भाग जाएगा और तुम शाम पर ग़ालिब होगे। तुमसे कोई झगड़ा और मज़ाहमत नहीं करेगा और यह मशरिक फ़तह होगा और किसरा का क़त्ल किया जाएगा। इसके बाद कोई किसरा नहीं होगा। इस पर मुनाफ़िक़ीन बड़ा उपहास उड़ाया करते थे। तारीख़ में लिखा है कि मुसीबत और बे-कसी और ख़ौफ़ व हेरास के इस आलम में इस अद्भुत लेकिन बेज़ाहिर नामुमकिन खुशखबरी से मोमिनों का ईमान और बढ़ गया और उनकी बशाशत में और इज़ाफ़ा का कारण बना, लेकिन मुनाफ़िक़ीन ने इस पर उपहास करना शुरू कर दिया। मुनाफ़िक़ीन ने कहा कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तुम्हें यह खबर दे रहे हैं कि वह यसरब से हिरा के महल और कसर के शहर देख रहे हैं और तुम वह फ़तह करोगे, जबकि तुम यहाँ अपने बचाव के लिए खंदकें खोद रहे हो और तुम में इतनी भी ताकत नहीं है कि तुम यहाँ से निकल सको और कुछ दूर क़ज़ाए हाजत के लिए जा सको।

इस मौके पर मुनाफ़िक़ीन की इस केफियत का इज़हार अल्लाह तआला ने इस आयत में किया है। फ़रमाया कि

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اِلَّا غُرُوْرًا۔ ।

(अल्-अहज़ाब : 13)

और जब मुनाफ़िक़ीन ने और उन लोगों ने जिनके दिलों में रोग था, कहा : हमसे अल्लाह और उसके रसूल ने धोखा के सिवा कोई वादा नहीं किया। लेकिन देखने वालों ने फिर देखा कि चंद ही सालों के भीतर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के समय में ख़िलाफ़त में ये सारे शहर और महल फ़तह हुए और यही बेबस और बेकस फ़ाक़ा कश मुमिन इन महलों के वारिस बने। हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि यह सभी फतूहात मैंने देखी हैं।

(अल् अक्तिफ़ा भाग 1 पृष्ठ 422) (उद्धारित सब्लुल् हुदा वल् रिशाद से भाग 4 पृष्ठ 368 दारुल कुतुब इलमिया बैरूत)

इन घटनाओं को जो पत्थर तोड़ने के हैं और जो चमत्कार प्रकट हुए, उन्हें हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी अपने अंदाज़ में वर्णन किया है। वे लिखते हैं कि "तंगी और कठिनाई की स्थिति में खंदक खोदते-खोदते एक जगह से एक पत्थर निकला जो किसी तरह टूटने में नहीं आ रहा था और सहाबा का यह हाल था कि वे तीन दिन के लगातार फाके से बहुत कमज़ोर हो रहे थे। आखिर तंग आकर वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और कहा कि एक पत्थर है जो टूटने में नहीं आ रहा। उस समय आपका भी यह हाल था कि भूख की वजह से पेट पर पत्थर बांध रखा था, लेकिन आपने तुरंत वहाँ पधारे गए और एक कुदाल लेकर अल्लाह का नाम लेते हुए उस पत्थर पर मारा। लोहे के लगने से पत्थर में से एक शोल निकल आया, जिस पर आपने जोर से अल्लाहु अकबर! कहा और कहा कि मुझे शाम देश की कुंजियाँ दी गई हैं। और खुदा की कसम! उस समय शाम

के लाल महल मेरी आँखों के सामने हैं। इस प्रहार से वह पत्थर कुछ हद तक टूट गया। दूसरी बार आपने फिर अल्लाह का नाम लेकर कुदाल चलाई और फिर एक शोल निकला, जिस पर आपने फिर अल्लाहु अकबर! कहा और कहा कि इस बार मुझे फारिस की कुंजियाँ दी गई हैं और मदायन के सफेद महल मुझे नज़र आ रहे हैं। इस बार पत्थर कुछ अधिक टूट गया। तीसरी बार फिर आपने कुदाल मारी, जिसके परिणामस्वरूप फिर एक शोल निकला और आपने फिर अल्लाहु अकबर! कहा और कहा कि अब मुझे यमन की कुंजियाँ दी गई हैं और ख़ुदा की कसम, सना के दरवाज़े मुझे इस समय दिखाए जा रहे हैं। इस बार वह पत्थर बिल्कुल टूटकर अपनी जगह से गिर गया। और एक रिवायत में इस तरह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हर मौके पर ऊंची आवाज़ से तकबीर कही और फिर बाद में सहाबा के पूछने पर आपने ये ख्वाब वर्णन किए। और मुसलमान इस अस्थायी रुकावट को दूर कर फिर अपने काम में व्यस्त हो गए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ये नज़ारे आलम-ए-कशफ से संबंध रखते थे। गोया इस तंगी के समय में अल्लाह तआला ने आपको मुसलमानों की आने वाली फतूहात और खैरों के मंजर दिखाकर सहाबा में उम्मीद और खुशी की रूह पैदा की, लेकिन बज़ाहिर हालात इस समय ऐसा तंगी और तकलीफ का समय था कि मुनाफिक़ीन ने मदीन में इन वादों को सुनकर मुसलमानों पर फब्तियाँ कसना शुरू कर दिया कि घर से बाहर कदम रखने की ताकत नहीं और क़ैसर और किसर की ममलिकतों के ख्वाब देखे जा रहे हैं। लेकिन अल्लाह के इल्म में ये सारी नेमतें मुसलमानों के लिए मकर्रर हो चुकी थीं। चूंकि ये वादे अपने-अपने समय पर अर्थात कुछ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आखिरी दिनों में और अधिकतर आपके खलीफाओं के ज़माने में पूरे होकर मुसलमानों के ईमान और आभार की बढ़ोतरी का कारण बने।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्होएम ए, पृष्ठ 578-577)

हज़रत मस्लिह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस बारे में लिखा है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "जब खंदक खोदी जा रही थी तो ज़मीन में से एक ऐसा पत्थर निकला जो किसी तरह लोगों से टूटता नहीं था। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस बात की खबर दी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वहाँ खुद तशरीफ़ ले गए। अपने हाथ में कुदाल पकड़ा और जोर से इस पत्थर पर मारा। कुदाल के पड़ने से इस पत्थर में से रोशनी निकली और आपने फ़रमाया, अल्लाहु अकबर! फिर दोबारा आपने कुदाल मारा तो फिर रोशनी निकली। फिर आपने फ़रमाया, अल्लाहु अकबर! फिर आपने तीसरी बार कुदाल मारा और फिर पत्थर से रोशनी निकली और साथ ही पत्थर टूट गया। इस मौके पर फिर आपने फ़रमाया, अल्लाहु अकबर! सहाबा रज़ियल्लाहु अन्होने आप से पूछा, हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आपने तीन बार अल्लाहु अकबर क्यों फ़रमाया है? आप ने फ़रमाया कि पत्थर पर कुदाल पड़ने से तीन बार जो रोशनी निकली तो तीनों बार अल्लाह ने मुझे इस्लाम की आने वाली तरक्क़ियों का नक्शा दिखाया। पहली बार की रोशनी में ममलिकत क़ैसर के शाम के महल दिखाए गए और उसकी कुंजियाँ मुझे दी गईं। दूसरी बार की रोशनी में मदायन के सफेद महल मुझे दिखाए गए और ममलिकत फारिस की कुंजियाँ मुझे दी गईं। तीसरी बार की रोशनी में सना के दरवाज़े मुझे दिखाए गए और ममलिकत यमन की कुंजियाँ मुझे दी गईं। बस तुम अल्लाह के वादों पर यकीन रखो। दुश्मन तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

(दीबाचा तफसीरुल् क़ुरआन, अनवारुल उलूम 20 पृष्ठ 269)

इन चमत्कारों में जो इन दिनों में होते रहे एक खाने का चमत्कार भी है। और भी खाने के चमत्कार होंगे लेकिन एक वाकया इस तरह वर्णन होता है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो ने खाना पकवाया और उसमें बरकत पाई।

इसकी विस्तार से जानकारी इस प्रकार है कि हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हीं दिनों में से एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखा कि भूख के कारण अपने पेट पर पत्थर बांध रखा है और सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हो तीन दिन से वहाँ हैं, कोई खाने की चीज़ भी नहीं चखी। तीन दिन हो गए, कुछ खाने को नहीं मिला। जाबिर कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से घर जाने की अनुमति मांगी तो आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुझे अनुमति दे दी। मैंने घर जाकर अपनी पत्नी से कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर भूख के गंभीर प्रभाव देखे हैं, जिसे देख कर मुझसे सहन नहीं हो सका। क्या घर में कुछ है? उसने कहा कि घर में एक साअ (लगभग 2.5 किलोग्राम) जौ का आटा है और एक बकरी का बच्चा है। फिर पत्नी ने वह बर्तन निकाला जिसमें एक साअ जौ था। और कहते हैं कि मैंने बकरी का बच्चा ज़िबह किया। पत्नी ने जौ पीसे और मैंने मांस को हंडिया में डाल दिया। मेरी पत्नी ने कहा कि क्योंकि खाना थोड़ा है, इसलिए चुपके से हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में आवेदन करना। ऐसा न हो कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके साथियों के सामने शर्मिंदगी का सामना करना पड़े, अर्थात लोग ज्यादा हो जाएं और खाना थोड़ा रह जाए। मैं वर्णन करता हूं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर होकर चुपके से कहा, "हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हमारे पास थोड़ा सा खाना है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके साथ एक या दो लोग चलें।" तो आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी अंगुलियों को मेरी अंगुलियों में डाला और पूछा कि कितना है? मैंने बताया कि इतना है। तो आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि बहुत है और अच्छा है। तुम घर जाओ और अपनी पत्नी से कहो कि मेरे आने तक हंडिया को नीचे न उतारें और रोटी पकाना शुरू न करें।

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आवाज़ लगाई, "हे खंदकवालो! जाबिर ने आपके लिए खाना तैयार किया है। आ जाओ!" और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लोग आगे-आगे चलने लगे। मुझे इतनी शर्म आई कि इसे केवल अल्लाह ही जान सकता है। मैंने दिल में कहा, "ये तो बहुत सारे लोग आ गए हैं। एक साअ जौ और बकरी के बच्चे पर इतने लोगों का आना अल्लाह की कसम, शर्मिंदगी है।" मैंने घर में अपनी पत्नी के पास जाकर सारा मामला बताया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने साथ मुहाजिरों और अनसार को ले कर आ रहे हैं। पत्नी ने कहा, "तेरा भला हो, मैंने तुम्हें कहा था कि चुपके से आवेदन करो।" पति ने पत्नी को बताया कि मैंने बिल्कुल उसी तरह कहा था जैसा तुमने कहा था। पत्नी ने कहा, "बाकी सब लोगों को तुमने आमंत्रित किया था या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने?" तो उन्होंने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आमंत्रित किया था। इस पर ईमान और इख्लास की मूरत पत्नी ने कहा कि फिर कोई चिंता की बात नहीं है। अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। अब चिंता की कोई बात नहीं। यह उस महिला का ईमान है जो अपने पति से भी उस समय ईमान और इख्लास में बढ़ गई। जाबिर वर्णन करते हैं कि फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे घर में दाखिल हुए और कहा, "आप दस-दस व्यक्तियों में प्रवेश करें।" अर्थात जो लोग आए थे, उन्हें दस-दस की टोलियों में बांटा गया। और जाबिर की पत्नी ने आटा निकाला तो आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसमें लार डाली और बरकत की दुआ दी। फिर हमारी हंडिया में लार डालकर बरकत की दुआ की। फिर हमें कहा, "रोटी पकाओ और सालेन डालो और हंडिया को ढक दो।" फिर रोटी तंदूर से निकालो और रोटियों को ढक दो, तो हमने ऐसा ही किया। हम सालेन निकालते और आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हंडिया को ढक देते, फिर उसे खोलते तो हमने देखा कि इससे कुछ कम नहीं हुआ और तंदूर से रोटी निकालते, फिर उसे ढक देते तो इससे भी कुछ कम नहीं होता। आप ने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रोटी के टुकड़े करते और उस पर मांस डालते और अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के करीब कर के कहते कि खाओ। जब एक जमाअत सैर हो जाती तो वह चले जाते। फिर दूसरे को बुलाते यहां तक कि हजारों व्यक्तियों ने वह खाना खाया और सब चले गए और हमारी हंडिया पहले की तरह उबल रही थी और हमारा आटा पहले की तरह पड़ा था। आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा, "ये तुम खाओ और लोगों को भी भेजो क्योंकि लोग बहुत भूखे हैं।"

(सब्लुल हुदा व रशाद, भाग 4, पृष्ठ 369, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

(लुग़ातुल् हदीस, भाग 2, पृष्ठ 648)

इस वाकये को हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी लिखा है। उन्होंने इस तरह वर्णन किया है कि "एक मुखलिस सहाबी जाबिर बिन अब्दुल्लाह ने आपके चेहरे पर भूख के कारण कमज़ोरी और थकावट के प्रभाव देखकर आपसे अपने घर जाने की अनुमति ली। घर आकर अपनी पत्नी से कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को भूख की शिद्दत के कारण गंभीर तकलीफ होती है। क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है? उसने कहा हां, कुछ जौ का आटा है और एक बकरी है। जाबिर कहते हैं कि इस पर मैंने बकरी को ज़बह किया और आटे को गूंथा और फिर अपनी पत्नी से कहा कि तुम खाना तैयार करो। मैं रसूलुल्लाह की सेवा में जाकर आवेदन करता हूं कि तशरीफ़ ले आएं। मेरी पत्नी ने कहा, "देखना मुझे ज़लील न करना। खाना थोड़ा है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ ज्यादा लोग न आएं।" जाबिर कहते हैं कि मैं गया और मैंने आहिस्ता-आहिस्ता आँहज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से आवेदन किया कि "हे रसूलुल्लाह! मेरे पास कुछ मांस और जौ का आटा है जिनके पकाने के लिए मैं अपनी पत्नी से कह आया हूं। आप अपने कुछ साथियों के साथ तशरीफ़ ले चलें और खाना खाएं।" आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा, "खाना कितना है?" मैंने कहा कि इस इस कदर है। आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा, "बहुत है।" फिर आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने चारों ओर नज़र डालकर ऊँची आवाज़ में कहा, "हे अनसार और मुहाजिरों की जमाअत! चलो, जाबिर ने हमारी दावत की है, चलकर खाना खा लो।" इस आवाज़ पर कोई एक हजार फ़ाकामस्त सहाबी आपके साथ हो लिए। आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जाबिर से कहा कि तुम जल्दी-जल्दी जाओ और अपनी पत्नी से कह दो कि जब तक मैं न आऊं, हंडिया को चूल्हे पर से न उतारे और न ही रोटियाँ पकाना शुरू करे। जाबिर ने जल्दी से जाकर अपनी पत्नी को सूचना दी और वह बेचारी बहुत घबरा गई कि खाना तो केवल कुछ लोगों के अंदाज का है और आ रहे हैं इतने लोग! अब क्या होगा? लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वहाँ पहुँचते ही बड़े सुकून के साथ हंडिया और आटे के बर्तन पर दुआ फ़रमाई और फिर कहा कि अब रोटियाँ पकाना शुरू कर दो। इसके बाद आपने आहिस्ता-आहिस्ता खाना बांटना शुरू किया। जाबिर वर्णन करते हैं कि मुझे उस ज़ात की कसम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि उसी खाने से सब लोग सैर होकर उठ गए और अभी हमारी हंडिया उसी तरह उबल रही थी और आटा उसी तरह पक रहा था।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम ए, पृष्ठ 578)

जंग-ए-अहज़ाब के बारे में बाकी बातें इन शा अल्लाह आने वाले समय में वर्णन करूंगा।

दुआओं की तरफ मैं ध्यान दिलाता रहता हूं। इस पर बहुत ध्यान रखें।

अल्लाह तआला हमारे ईमानों को मजबूत करे। हर जगह, हर देश में रहने वाले अहमदी को, बांग्लादेश में, पाकिस्तान में और दूसरी जगहों पर हर अहमदी को हर बुराई से बचाए। और दुनिया जिस आग में पड़ रही है और जाने की बड़ी तेजी से कोशिश कर रही है, इससे दुनिया को भी बचाए। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

अल्लाह तआला सब ताकतों का मालिक है। अगर अभी भी ये लोग सुधार की तरफ ध्यान दें, तो अल्लाह तआला उन्हें मुश्किलों से निकाल सकता है। अल्लाह तआला करे कि उन्हें अक्ल और समझ आ जाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

किस्म की जंग की शुरुआत तो दुश्मन की तरफ़ से ही हो सकती है। और जब उससे बचना दुश्मन के इख्तियार में है, तो फिर भी अगर वह ऐसी जंग करता है और जबरदस्ती दूसरों का मज़हब बदलवाना चाहता है, तो या तो वह पागल है, या उसे सज़ा दिए जाने के लायक़ है। क्योंकि उसके पास यह इख्तियार था कि वह हमला न करता, वह दूसरों पर ज़ुल्म न करता, और वह दीन के लिए जंग न करता, और इस तरह वह खुद को तबाही और बर्बादी से बचा सकता था।

यह भी याद रखना चाहिए कि

اِنَّ اللّٰہَ یُدٰفِعُ عَنِ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا بعد اُذِنَ لِلَّذِیۡنَ یُقٰتَلُوۡنَ بِاَنَّہُمۡ ظُلِمُوۡا

"इन्नल्लाह युदाफिउ अनिल्लज़ीना आमनू बादा उज़िना लिल्लज़ीना युक़ातिलून बि-अन्नाहुम ज़ुलिमू" पर यह ऐतराज़ हो सकता था कि जब बंदे खुद काफ़िरों से लड़ें, तो खुदा ने कैसे दिफ़ा (रक्षा) किया? इन आयतों में इसका जवाब दिया गया है कि हालांकि ज़ाहिर में तो मोमिन लड़ेंगे, लेकिन वे और बाकी लोग जानते हैं कि वे कमज़ोर हैं और जीत नहीं सकते। इसलिए "इन्नल्लाह अला नस्रिहिम लक़दीर" फ़रमा कर बताया कि असल लड़ाई अल्लाह तआला की तरफ़ से ही होगी। मोमिन केवल उसके हथियार होंगे जिनसे वह काम लेगा। फतह देना अल्लाह के इख्तियार में होगा और वह फतह देगा। और यह इस बात का सुबूत होगा कि यह जंग खुदा ने लड़ी है, न कि इंसानों ने।

फिर अगली आयतों में भी फ़रमा दिया कि "वला यनसुरन्नल्लाहो मन-यंसोरोहु" अर्थात जो लोग खुदा के दीन की ताईद के लिए खड़े हो जाते हैं, अल्लाह तआला उनकी मदद करता है। यानी, बावजूद मोमिनों के लड़ने के, असल दिफ़ा अल्लाह के हाथ में ही रहता है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 6, पृष्ठ 63, मुद्रित कादियान 2010)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

से बड़े-बड़े महान काम कर दिखाए, और फिर भी यही कहा कि जो करना चाहिए था, वह नहीं किया। ईमान ने उन्हें वह शक्ति दी कि अल्लाह तआला की राह में सिर देना और जानों की कुर्बानी देना एक मामूली सी बात थी। और जब अभी कोई स्पष्ट नतीजे नज़र नहीं आ रहे थे, तब भी देखो, कितने मुसलमानों ने दुश्मनों के हाथों से कैसी-कैसी तकलीफें और मुसीबतें केवल لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ कहने की वजह से बर्दाश्त कीं।

एक वह जमाना था कि सिर देना कोई बड़ी बात न थी, और एक यह जमाना है कि ईमानी ताकत होते हुए भी, जबकि विरोधी ऐसी सख्त सज़ाएं नहीं देते, एक न्यायप्रिय सरकार के साये में रहते हैं, सल्तनत किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं करती, दीनी ज्ञान हासिल करने के पूरे साधन मौजूद हैं, और धार्मिक कार्यों को अदा करने में कोई तकलीफ नहीं है, फिर भी एक सज्दा करना भारी मालूम होता है।

ज़रा सोचो, कहाँ सिर देना और कहाँ सिर्फ एक सज्दा! इससे साफ पता चलता है कि आज ईमान कितनी गिरावट की स्थिति में है।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 40, एडिशन 2018, कादियान)

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान (Ahmadiyya Vocational Training Centre) में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing, Electrician, Welding, Motor Vehicle, AC & Refrigerator, Diesel Mechanic, Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com

9872725895, 8077546198

(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्ज़ेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

रविवार ,2022 अक्टूबर 2 ,दौरा-ए-अमेरिका का आठवाँ, नौवा दिन

ज़ायन से डलास रवाना, डलास में आगमन

आज Buffalo जमाअत से आने वाले 1325 मील, New York से आने वाले 1564 मील, Silicon Valley से आने वाले 1701 मील, Sacramento से आने वाले सदस्य 1725 मील और Seattle से आने वाले 2095 मील की लंबी यात्रा तय करके मुलाकात के लिए पहुंचे थे। आज Dallas की स्थानीय जमाअत के अलावा निम्नलिखित दस जमाअतों से भी सदस्य और परिवार मुलाकात के लिए पहुंचे थे : Fort Worth, Sacramento, Houston, जॉर्जिया, Austin, Las Vegas, Silicon Valley, लॉस एंजिल्स, Kansas City, और Kentucky।

फैमिली मुलाकातें

जाँच के बाद, शाम के छह बजकर पच्चीस मिनट पर हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर तशरीफ़ लाए और फैमिली मुलाकातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

आज शाम के इस सत्र में आठ फैमिलियों और चार समूहों ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाकात करने वाले व्यक्तियों की संख्या 88 थी। इन सभी फैमिलियों और समूहों ने व्यक्तिगत रूप से हज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य पाया। हज़ूर-ए-अनवर ने दया करके शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को कलम भेंट किए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट दी।

आज मुलाकात करने वाली फैमिलियाँ और सदस्य अमेरिका की विभिन्न 19 जमाअतों से आए थे। आज भी कुछ सदस्य लंबी और कठिन यात्रा तय करके अपने आका से मुलाकात करने पहुंचे थे। ये लोग जहाँ हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात का सौभाग्य पाते हैं, वहीं हज़ूर-ए-अनवर की इमामत में नमाज़ अदा करने का भी अवसर प्राप्त करते हैं।

आज Buffalo जमाअत से आने वाले 1325 मील, New York से आने वाले 1564 मील, Silicon Valley से आने वाले 1701 मील, Sacramento से आने वाले सदस्य 1725 मील और Seattle से आने वाले 2095 मील की लंबी यात्रा तय करके मुलाकात के लिए पहुंचे थे।

जमाअत के सदस्यों के अनुभव

आज भी बहुत से लोग थे जिनकी हज़ूर-ए-अनवर से यह पहली मुलाकात थी।

Tulsa जमाअत से आए एक मित्र बिशारत रहमान साहिब कहने लगे कि आज की मुलाकात मेरे लिए एक सपना थी। मैं कुछ साल पहले बांग्लादेश से आया था। मैं अमेरिका के एक ऐसे क्षेत्र में हूँ जहाँ जमाअत के सदस्यों की संख्या कम है। हज़ूर-ए-अनवर ने मुझसे कहा कि आपकी जमाअत बहुत छोटी है, इसलिए आपको जमाअत को संगठित करने और संख्या बढ़ाने के लिए अधिक मेहनत करने की आवश्यकता है। हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि अपनी जमाअत के लिए अधिक समय दें और दुआ भी करें। अब मैं जिम्मेदारी का बढ़ता हुआ एहसास लेकर अपने शहर वापस जा रहा हूँ।

मुनीर अहमद बाजवा साहिब, जो Dallas जमाअत से मुलाकात के लिए आए थे, कहने लगे कि मेरी शादी को चालीस साल हो चुके हैं, लेकिन यह पहला मौका है जब हम पति-पत्नी ने हज़ूर-ए-अनवर से एक साथ मुलाकात की है। मैं अमेरिका के अमीर जमाअत का रब्वा में क्लास-फेलो था। मुलाकात में मैंने हज़ूर-ए-अनवर से कहा कि अब मैं रिटायर हो गया हूँ, मुझे सेवा का मौका दें। इस पर हज़ूर-ए-अनवर ने मुस्कराकर कहा कि जाओ और अपने क्लास-फेलो से पूछो।

एक दोस्त मुज़फ़्फ़र कश्मीरी साहिब, जो Dallas जमाअत से थे, ने बताया कि मेरी ज़िन्दगी में हज़ूर-ए-अनवर से यह पहली मुलाकात थी। मुलाकात का अनुभव मेरे लिए शब्दों में बयान करना मुश्किल है। मैंने हज़ूर-ए-अनवर में एक अद्भुत आकर्षण देखा। उन्होंने कहा कि मैं मुलाकात के दौरान चुप था और अपनी पत्नी को बात करने का अवसर दे रहा था। हज़ूर-ए-अनवर ने मुझसे कहा कि आप इतने चुप क्यों हैं, बात करें। उन्होंने कहा कि मैं एक बावर्ची हूँ। पाकिस्तान में मुझे कुछ नहीं समझा जाता था, लेकिन जमाअत की वजह से मैं अमेरिका आ सका। अल्लाह त'आला ने मुझे जमाअत के माध्यम से इज़्ज़त दी और आज मैं कितना खुशकिस्मत हूँ कि मुझे अल्लाह ने अपने आका से मिलने का अवसर दिया।

अशफ़ाक मनहास साहिब, जो Dallas जमाअत से आए थे, कहने लगे कि हज़ूर-ए-अनवर ने मुझे अंगूठी भेंट की। मैं जलसा सालाना के दिनों में हज़ूर-ए-अनवर के घर ही ठहरा करता था। आज जब मैंने अंगूठी की दरख्वास्त की तो हज़ूर-ए-अनवर ने कहा कि क्योंकि आप हमारे घर में मेहमान रहे हैं, तो मैं आपको एक अंगूठी देता हूँ, हालांकि आप कई सालों से शादीशुदा हैं।

एक महिला, हुमैरा अहमद साहिबा, जो Houston जमाअत से आई थीं, बहुत भावुक थीं। उन्होंने कहा कि मेरी जवान बेटी, जो डिप्रेशन की मरीज़ है, मेरे साथ मुलाकात में थी। मैंने हज़ूर से उसकी दुआ के लिए अनुरोध किया। हज़ूर-ए-अनवर ने बहुत दुआएं दीं और तबर्रुक भी दिया। मेरे दिल को तसल्ली और बहुत सुकून मिला कि हज़ूर मेरी बेटी के लिए दुआ कर रहे हैं।

Dallas जमाअत की सदस्य ज़ैनब अहमद साहिबा ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि आज मुझे मेरी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी नेअमत मिली है, जो मैं अल्लाह से मांग सकती थी। मेरी इच्छा पूरी हो गई, मैंने हज़ूर से मुलाकात कर ली। यह कहकर वह रोने लगीं और उनसे आगे बात नहीं हो पाई। उन्होंने कहा कि मैं एक बूढ़ी औरत हूँ और आज का दिन मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा खुशनसीब दिन है।

एक मित्र, वसीम अहमद मीर साहिब, Houston जमाअत से आए थे। मुलाकात करके बाहर आते ही वह रोने लगे। वह बोल नहीं पा रहे थे। बस इतना ही कहा कि मेरे जज़्बात ऐसे हैं कि मैं उन्हें शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता।

मुहम्मद रज़वान जावेद साहिब, जो Fort Worth जमाअत से आए थे, कहने लगे कि इमीग्रेशन समस्याओं की वजह से मैं पिछले 13 सालों से अपनी फैमिली से नहीं मिला। इस कारण मैं परेशान था और कई सालों से मेरे दिल और दिमाग में बहुत थकान थी। लेकिन हज़ूर से मिलने के बाद सारी थकान दूर हो गई। हज़ूर ने मेरे लिए दुआ की। अब मुझे दिल का सुकून और राहत मिली है।

Dallas जमाअत के एक मित्र अहद अहमद खान साहिब कहने लगे कि आज हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा सम्मान है।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 17 October 2024 Issue No. 42

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

मैं हज़ूर से मिलने के लिए बेचैन था। हज़ूर-ए-अनवर ने मेरी बेचैनी को दूर कर दिया।

मुलाकातों का यह प्रोग्राम रात आठ बजे तक चलता रहा। इसके बाद, साढ़े आठ बजे, हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने "मस्जिद बैतुल इकराम" में तशरीफ़ लाकर, नमाज़-ए-मगरिब और इशा को मिलाकर अदा किया। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहायशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

दौरा-ए-अमेरिका का दसवां दिन 5 अक्टूबर 2022, बुधवार

अहमदिया मेडिकल एसोसिएशन अमेरिका के अधिकारी, वाक़िफ़ात-ए-नौ, वाक़िफ़ीन-ए-नौ तथा जमाअत के सदस्यों से मुलाकातें।

हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 6:10 बजे मस्जिद बैतुल इकराम में तशरीफ लाकर नमाज़-ए-फजर पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद, हज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ ले गए।

सुबह के वक्त, हज़ूर-ए-अनवर ने दफ्तरी डाक का मुआइना किया और निर्देश दिए। हज़ूर-ए-अनवर दफ्तर के विभिन्न मामलों को निपटाने में व्यस्त रहे।

फैमिली मुलाकातें

प्रोग्राम के मुताबिक, 11 बजे हज़ूर-ए-अनवर अपने दफ्तर तशरीफ लाए और फैमिली मुलाकातों का सिलसिला शुरू हुआ। आज सुबह के इस सत्र में 31 परिवारों के 105 लोगों ने अपने प्यारे आका से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। हज़ूर-ए-अनवर ने मेहरबानी करके शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को कलम भेंट किए और छोटे बच्चों को चॉकलेट दी।

आज Dallas की स्थानीय जमाअत के अलावा निम्नलिखित दस जमाअतों से भी सदस्य और परिवार मुलाकात के लिए पहुंचे थे : Fort Worth, Sacramento, Houston, जॉर्जिया, Austin, Las Vegas, Silicon Valley, लॉस एंजिल्स, Kansas City, और Kentucky।

आज भी कुछ सदस्य और परिवार लंबी दूरी तय करके अपने आका से मुलाकात करने पहुंचे थे। इनमें से Las Vegas से आने वाले 1221 मील, Silicon Valley से आने वाले 1701 मील, और लॉस एंजिल्स से आने वाले सदस्य 1433 मील का लंबा सफर तय करके पहुंचे थे।

इसके अलावा, पाकिस्तान से आने वाले कुछ सदस्यों ने भी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

आज भी मुलाकात करने वालों में बड़ी संख्या उन लोगों की थी, जो अपनी ज़िंदगी में पहली बार हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मिल रहे थे और उन्हें अपने आका के क़रीब कुछ पल गुज़ारने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा था।

एक मित्र, सैयद इरफ़ान अहमद साहब, जिनका ताल्लुक़ झेलम, पाकिस्तान से है, ने कहा कि मैं बहुत ख़ुशनसीब हूँ कि मेरी हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात हुई। आज यहाँ आना मेरे लिए एक चमत्कार है, क्योंकि मेरा वीज़ा तीन बार रद्द हो चुका था। लेकिन हज़ूर-ए-अनवर के दौरा-ए-अमेरिका से पहले मेरा वीज़ा मंजूर हो गया, जो मेरे लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था। आज मेरी हज़ूर-ए-अनवर से ज़िंदगी में पहली मुलाकात थी। हज़ूर ने, समय की कमी के बावजूद, मेरी सारी बातें सुनीं और हर सवाल का जवाब दिया और मार्गदर्शन किया। आज मैं बहुत ख़ुश हूँ।

एक और मित्र, सैयद फ़हीम अहमद साहब, ने कहा कि जब हम मुलाकात के लिए दफ़्तर में दाख़िल हुए, तो सिर्फ़ हमें देखकर और पहचान पूछकर हज़ूर को सब पता चल गया कि हमारा कौन-सा ख़ानदान है और मेरा पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या है। मैंने कुछ मामलों में हज़ूर से मार्गदर्शन लिया। हज़ूर ने फ़रमाया कि आप चिंता न करें, इन शा अल्लाह काम हो जाएगा। मुझे बहुत सुकून मिला। मैं हज़ूर से दुआएं लेकर वापस आया।

एक मित्र आसिफ़ अहमद शेख़ साहब ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं इस मुलाकात का अनुभव कैसे बयान करूं। हम तीन साल घाना में रहे। हज़ूर ने इस बारे में हमसे पूछा। मेरे वालिद शहीद हो गए थे, फिर हम मामू के साथ रहे। हज़ूर ने हमें घाना भेजा था। हज़ूर को सब याद था। यह मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाकात थी। मैंने इससे पहले हज़ूर से कभी मुलाकात नहीं की थी। मेरे वालिद 2006 में कराची में शहीद हुए थे। फिर 2007 में मेरे वालिद के मामू भी शहीद हो गए और उसी साल मेरे चाचा भी शहीद हो गए थे। हमारे परिवार को इस वजह से निशाना बनाया गया क्योंकि हम सभी जमाअत के सक्रिय सदस्य थे। हम ख़िलाफ़त की बरकतों से ही अमेरिका पहुंचे हैं और आज हमें मुलाकात की यह महान नेमत प्राप्त हुई।

एक मित्र, ताहिर सैयद साहब, ने अर्ज़ किया कि आज हज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाकात थी। मैं इसे कभी नहीं भूल सकता। यही तो मेरी ज़िंदगी की सबसे बड़ी पूंजी है। जो चंद लम्हे मैंने अपने आका के साथ गुज़ारे, मुझे बहुत सुकून और राहत मिली है। मेरा दिल तसल्ली से भर गया है। एक महिला, अमीना रेहान साहिबा, ने कहा कि जब हमारी बारी आई, तो मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। मैं सोच रही थी कि मैं कैसे हज़ूर को देख पाऊंगी। उस नूरानी चेहरे को कैसे देखूंगी। हमें ऐसा महसूस हो रहा था जैसे हम जन्नत में आ गए हैं। हर तरफ़ सिर्फ़ सुकून ही सुकून था। मैं अपनी हालत बयां नहीं कर सकती। मेरा जिस्म और हाथ उसी वक़्त कांपने लगे थे जब हमें बताया गया कि हमारी मुलाकात होगी और हम हज़ूर-ए-अनवर के पास जा रहे हैं।

एक दोस्त, रुहानुल्लाह ख़ान शाहिद साहब, जो जमाअत Kentucky से आए थे, ने कहा कि मैंने अपने प्यारे आका का मुबारक चेहरा देखने के लिए 15 घंटे का सफ़र किया। दिल में बहुत कुछ सोचकर आए थे कि हज़ूर से ये-ये बातें करेंगे, लेकिन यहां आकर कुछ भी नहीं कहा जा सका। बस हम हज़ूर-ए-अनवर का चेहरा देखते रहे। हज़ूर बातें करते रहे। यह ख़लीफ़ा का प्यार है जो आज हमें मिला।

शेष ...

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल, बलगम इत्यादि) कंप्यूटराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا   اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad